प्राक्कल्पना
Krishna Nand B.A III Hons (1)
continue

क्षेत्र को सीमित रखने की बात कही गई है। इनके अनुसार " परिकल्पना का एक महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र को सीमित करना है।"

जब शोध परिकल्पना का क्षेत्र सीमित हो जाता है, तब अध्ययन सामान्य से विशिष्ट बन जाता है। यह तभी संभव हो पाता है जब प्राक्कल्पना निर्माण से शोध का क्षेत्र सीमित हो जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं परिकल्पना से शोध क्षेत्र सीमित हो जाता है और अध्ययन को विशिष्ट स्वरूप प्रदान करता है।

(8) प्राक्कल्पना को वैज्ञानिक परीक्षणों एवं उपकरणों से संबंधित होना चाहिए—

उपलब्ध वैज्ञानिक परीक्षणों से संबंधित होना एक अच्छी शोध परिकल्पना की महत्वपूर्ण कसौटी मानी जाती है। अर्थात शोधकर्ता के पास शोध कार्य हेतु प्रस्तावित चरों को मापने के लिए साधन उपलब्ध होना चाहिए। चरों को मापने के लिए जब साधन उपलब्ध नहीं होगा, तो परिकल्पना की सत्यता की जाँच संभव नहीं हो पायेगा। इसलिए प्राक्कल्पना में वैज्ञानिक परीक्षणों एवं उपकरणों से संबंधित होने की विशेषता या गुण अवश्य होनी चाहिए।

परिकल्पना
Krishna Nand B.A III Hon's (2) continue

(9) परिकल्पना को सत्य की स्थापना में सहायक होना चाहिए —

पारिकल्पना की सहायता से सत्य को स्थापित या पुनर्स्थापित करने में मदद मिलती है। निर्मित परिकल्पना की जाँच अनुभाविक (Empirical) आधार पर किया जाता है। इससे परिकल्पना की सत्यता का परीक्षण होता है। माना कि परिकल्पना असत्य भी हो जाता तो भी एक तो एक निष्कर्ष होता होता है। अतः हम यह पाते हैं कि दोनों अवस्थाओं में एक निष्कर्ष स्थापित है। यह परिकल्पना की एक महत्वपूर्ण कसौटी मानी गई है।

(10) परिकल्पना को क्रियात्मक रूप से स्पष्ट होना चाहिए :—

शोध से संबंधित परिकल्पना निर्माण के वक्त इस बात पर विशेष रूप से ध्यान देना आवश्यक होता है कि इसमें प्रयुक्त संप्रत्यय सुस्पष्ट हो तथा जिसकी पूर्ण व्याख्या वस्तुनिष्ठ ढंग से किया जा सके और दूसरे भी उसे उसी रूप में समझ सकें। साथ-ही-साथ संप्रत्यय को सही ढंग से परिभाषित किया जा सके।

परिकल्पना में प्रयुक्त संप्रत्ययों की स्पष्ट व्याख्या एवं सर्वमान्य

परिभाषा की विशेषता अवश्य होनी चाहिए।

(11) प्राक्कल्पना को पद्धति विकास में सहायक होना चाहिए :—

प्राक्कल्पना की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि, यह पद्धति विकास में सहायक होता है क्योंकि कभी परिकल्पना का स्वरूप ऐसा होता है कि उसके अनुभाविक प्रमाणीकरण (Empirical verification) के लिए नई अध्ययन विधि या उपकरण एवं परीक्षण का विकास करना आवश्यक हो जाता है अतः परिकल्पना में यह विशेषता भी पाई जाती है कि इससे नई पद्धति का विकास होता है।

(12) परिकल्पना को सिद्धान्त रचना में सहायक होना चाहिए :—

परिकल्पनाओं से नये-नये सिद्धान्तों की रचना भी की जाती है। शोधार्थी द्वारा परिकल्पनाओं के निर्माण के पश्चात् वैज्ञानिक पद्धतियों से उसकी जाँच बार-बार की जाती सभी प्राप्त समान निष्कर्षों के आधार पर एक सिद्धान्त की स्थापना की जा सकती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि परिकल्पना में नये सिद्धान्तों की रचना की विशेषता पाई जाती है। अर्थात् सिद्धान्त रचना भी वैज्ञानिक प्राक्कल्पना की एक महत्त्वपूर्ण कसौटी है।